FROM "MAITRI", BRAHMA VIDYA MANDIR, PAUNAR (MAHARASHTRA)

युवा स्यात् साधुयुवा

गांधीप्रेमी पीटर रुहे

गीता

सन् 1986 में बयोवृद्ध श्री प्रभुदासभाई गांधी के साथ जर्मनी का पीटर रुहे यहां आया था। तीन-चार दिन हमारे बीच रहा। खादी की पोषाक उसे खूब फबती थी, सात्त्विक दीखता था। प्रभुदासभाई की कुछ मदद करता, शेष समय खूब व्यस्त रहता, एक मिनट बरबाद न होने देता। जिस किसी से मिलता, गांधीजी के बारे में उत्कट जिज्ञासा से सुनता। तबसे वह करीब हर साल यहां आता है।

पीटर बर्लिन में रहता है। सन् 1957 में उसका जन्म। उसके प्रेमल परिवार में माता-पिता-बहन हैं। कहता था, "माता-पिता ने हमारे विकास के लिए प्रयत्न करने में कोई कमी नहीं रखी। प्रेम से, कभी कष्ट सहन कर के भी संतानों के विकास की वे चिंता करते।"

सन् 1979 में पीटर ने 'कंप्यूटर-प्रोग्रामर' के नाते टेक्नीकल युनिवर्सिटी में काम करना आरंभ किया। अच्छी, संपन्न जिंदगी उसकी थी। किशोरवय में वह अच्छा फुटबाल खिलाड़ी था। उसे गोल-कीपर बनाया जाता। दस-पंद्रह साल वह उस खेल में आगे रहा। बाद उसे लगा, "यह कोई अपने जीवन का कार्य नहीं है। जीवन में और बहुत-सी चीजें हैं करने की।" तो खेल को तिलांजलि दे दी। मित्रों के साथ मिलना-जुलना होता था। अच्छी नौकरी थी। प्रशस्त फ्लेट, मोटरकार, मोटर-साइकिल आदि साधन-संपन्नता थी। पर इन बातों में भी दिल ज्यादा न रम सका। चार-पांच साल के बाद यह भी छूट गया। जर्मनी में अपने भारतीय प्राध्यापक तथा एक भारतीय मित्र के परिचय से उसे भारत आने की इच्छा हुई। सन् 1983 में वह प्रथम बार 'टुरिस्ट' (प्रवासी) के नाते भारत आया। भारत के धार्मिक व सर्वोदय के कई स्थान देखे। उस समय एटन बरो की 'गांधी' फिल्म नयी-नयी लगी थी। पीटर ने दो बार वह देखी। एक नया ही दालान खुल गया। कहता था, "यह तो बिलकुल नयी बात है! हमारे यहां लोगों को गांधी का परिचय ही नहीं है। उनके बारे में पर्याप्त साहित्य भी उपलब्ध नहीं है।" बस, तबसे उसको गांधी की धुन लगी है।

पीटर आहार तथा सामाजिक जीवन के विषय में प्रयोग करता ही रहता था। आहार का प्रयोग करते-करते वह शाकाहार तक पहुंचा था। गांधी-विचार के अध्ययन से उसे अपने इस प्रयोग में बहुत बल मिला।

जैसे-जैसे गांधी का परिचय होता गया, वैसे ही वैसे गांधी के जीवन और कार्य का रंग उस पर चढता गया। जीवन सादगी की ओर बढता चला। सुख-सुविधाएं एक के बाद एक छूटती गयीं। पूरे समय की नौकरी में गांधी-कार्य के लिए समय निकल नहीं पाता था। बिना नौकरी के वहां जर्मनी में चल नहीं सकता, तो वह पार्ट टाईम नौकरी करने लगा। कार के बदले अब वह साइकिल पर घूमता है। प्रशस्त फ्लेट छोड अन्यत्र रहने लगा है।

वह समय था जब अण्वास्त्रों की होड दिन-ब-दिन बढती चली जा रही थी। पश्चिम की भौतिकतावादी मूल्यहीन जीवन-शैली के कारण पर्यावरणीय दूषण मानव-जीवन के लिए खतरनाक बन गया था। पीटर सब देख रहा था, सोच रहा

था, पर कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। भारत-यात्रा में प्राप्त गांधी-परिचय ने नयी राह दिखायी। कहता था, "एक बात का प्रत्यय हो गया कि गांधी इस जमाने के लिए और हम जैसों के लिए 'रेलेवन्ट' (सुसंगत) हैं।" इसी श्रद्धा और आशा से उसने गांधी-साहित्य इकट्ठा करना आरंभ किया। जगह-जगह घूम कर, खूब मेहनत कर फोटो, साहित्य आदि जो भी मिला, इकट्ठा करता गया। उसी साल सन् 1983 में उसने समानशील लोगों के साथ मिल कर बर्लिन में 'गांधी इन्फर्मेशन सेन्टर' (गांधी-परिचय केंद्र) की स्थापना की। चार-पांच सालों में ही इस केंद्र में गांधी-विषयक सामग्री इतने विपुल प्रमाण में एकत्रित हो गयी कि उनके एक परिचयपत्रक के अनुसार, "भारत के बाहर, अन्य देशों की तुलना में आज 'गांधी इन्फर्मेशन सेन्टर' सबसे बडा गांधी-संग्रहालय है।" इस केंद्र में 6000 ग्रंथ, 11000 फोटो, ऑडिओ-विडियो टेप्स, फिल्में, डोक्युमेन्टस्, अखबार एवं पत्रिकाएं, चरखे, इनके अलावा गांधीजी के 1000 पत्र, -ओ अधिकांश जर्मन लोगों को संबोधित कर लिखे गये हैं – आदि सामग्री संगृहीत है।

'गांधी इन्फर्मेशन सेन्टर' को स्थापित हुए अभी तो एकाध साल हुआ था, इतने थोडे समय में ही वहां इतनी सामग्री इकट्ठा हुई कि दूसरे ही साल, 1984 में उन्होंने बर्लिन में सर्वसाधारण लोगों के लिए एक प्रदर्शन आयोजित किया। उसे अच्छा प्रतिसाद मिला। करीब आठ हजार लोगों ने प्रदर्शन देखा। पीटर का उत्साह बढा। गांधी के जीवन और विचार के गहरे अध्ययन की प्रेरणा ज्यादा से ज्यादा लोगों को मिले, इसके लिए शक्य उतनी विपुल सामग्री जिज्ञासुओं को उपलब्ध कराने की मानो उसको लगन ही लग गयी। उसके प्रयत्नों से बर्लिन में और बर्लिन के बाहर तथा विदेशों में भी जगह-जगह प्रदर्शन, छोटी-मोटी प्रदर्शनियां आदि के आयोजन हुए। अब तक अलग-अलग सात प्रदर्शनियां जर्मनी के अलावा डेन्मार्क, इंग्लैंड, इस्राइल और भारत – इन देशों के 35 स्थानों में संपन्न हुई।

'मेरा जीवन ही मेरा संदेश', गांधीजी का यह वाक्य पीटर के लिए मंत्र बना है। गांधीयुगीन वातावरण का विशेष आकलन करने के लिए पीटर को गांधीजी के सहवासियों एवं रिश्तेदारों से मिलने में बहुत रस आता है। करीब हर साल जाडे के दिनों में वह तीन महीने भारत में बिताता है, कुछ न कुछ आयोजन भी करता है। भारत की विविध गांधी-संस्थाओं से उसका अच्छा संपर्क बना है। दिल्ली में गांधी-स्मारक-निधि, गांधी-शांति-प्रतिष्ठान और गांधी-दर्शन तथा समूचे भारत में व्याप्त इन सबकी शाखाओं से पीटर का अच्छा परिचय है। और उन सबसे उसे अपने कार्य में अच्छा सहयोग भी मिलता है। दूसरी ओर पीटर भी उनको तकनीकी सलाह और सहायता दे रहा है, जिससे उनकी कीमती गांधी-सामग्री की ठीक हिफाजत हो सके। उसी के प्रयत्नों से गांधी विषयक कुछ मूल्यवान सामग्री – फिल्में और फोटो – जर्जरित या नष्ट होने से बच गयी। स्व. कनु गांधी एवं चित्रलभाई झवेरी के गांधी-संग्रह को सुरक्षित बनाने में पीटर ने सराहनीय सहयोग दिया।

'गांधी इन्फर्मेशन सेन्टर' की ओर से स्लाइड-शो, फिल्में, ग्रंथालय, प्रवचन-गोष्ठियां आदि विविध प्रवृत्तियां चलती हैं। कई बार स्थानीय एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों एवं गांधीजनों को आमंत्रित किया जाता है।

इन प्रवृत्तियों को करते-करते बर्लिन और अन्य देशों में भी समानशील अनेक लोगों के साथ, अनेक ग्रुपों के साथ उनका संपर्क बढा, परिचय गहरा

होता गया। पीटर व उसके साथियों को महसूस हुआ कि इन सबको एकसूत्र में पिरोना लाभदायक होगा। पीटर ने अभिक्रम लिया और सन् 1987 में 'नेटवर्क आफ गांधीग्रुप्स इन योरप' की स्थापना हुई।

ओस्ट्रियन टी. वी. प्रोडक्शन ने सन् 1985 में 'मीराबहन' (मिस स्लेड) पर तथा 'चिपको आंदोलन और हिमालय-प्रदेश का पर्यावरण' पर फिल्में उतारीं। पीटर ने उसमें अच्छा मार्गदर्शन दिया। दो-तीन साल पहले – सन् 1988 में जर्मन टी. वी. प्रोडक्शन ने गांधीजी पर फिल्म तैयार की, उसमें भी पीटर का अच्छा योगदान रहा।

अभी-अभी, पीटर व उसके साथियों ने केंद्र की ओर से 'सोईंग आफ पीस' (शांति बीजारोपण) नामक डोक्युमेन्टरी फिल्म तैयार की है। विभिन्न स्थानों में चल रहे अहिंसक प्रतिकार के विविध अभियानों का उसमें परिचय दिया गया है।

'आन द ट्रेसिस आफ एम. के. गांधी' – गांधी के पदचिह्नों पर – नाम से जर्मन युवकों की एक समूह-यात्रा सन् 1987 में आयोजित हुई थी। पीटर ने उसके गाइड – पथदर्शक बन कर उनको गांधीजी के जीवन से संबंधित स्थान दिखाये, महात्मा के सहवासियों-संबंधियों से भेंट करवायी। इस आयोजन में गुजरात की साइकिल-यात्रा तथा वर्क-कैंप विशेष उल्लेखनीय हैं।

केंद्र की ओर से कुछ प्रकाशन-कार्य भी हो रहा है। उसमें मुख्य प्रकाशन है जर्मन भाषा में प्रकाशित गांधीजी के जीवन और कार्य विषयक पुस्तक, 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश'। अन्य तैयार हो रहे प्रकाशनों में उल्लेखनीय हैं, 'गांधी-चित्रावलि' और 'ओताबापानो बडलो'। गांधी-चित्रावलि में गांधीजी के फोटो का आल्बम अंग्रेजी-जर्मन भाषाओं में परिचय के साथ प्रकाशित होगा। प्रभुदासभाई लिखित मूल गुजराती पुस्तक 'ओताबापानो बडलो' (गांधी-वंशावलि) में गांधी-कुटुंब की 13 पीढियों के 1600 सदस्यों की नामावलि है। इसके साथ थोडा-सा इतिहास भी जोडा जायेगा, जिसके लिए पीटर जीवित सदस्यों से भेंट करता रहता है।

ये सारे काम पीटर अपनी पार्टटाइम नौकरी करते हुए कर रहा है।

पीटर जहां रहता है, वहां सात लोगों का उसका ग्रुप है। वे सब साथ रहते हैं। अपना मकान निवास-योग्य बनाने के लिए उन सबने साथ मिल कर खूब श्रम किया। पीटर कहता था, "हमारी 'कम्युनिटी' (समूह-जीवन) है ऐसा तो नहीं कह सकता। पर हमने साथ मिल कर जो श्रम किया, उसके कारण हम लोगों के बीच काफी निकटता और आत्मीयता हम महसूस कर रहे हैं।" 'सादा जीवन, उच्च विचार' की दिशा में उनकी कोशिश चल रही है।

सन् 1994 में गांधीजी की 125 वीं जन्मशताब्दी आ रही है। पीटर को उत्सुकता है कि इस निमित्त व्यापक पैमाने पर एक बहुत बडा आयोजन कर गांधीजी का भलीभांति विश्वव्यापक परिचय कराया जाये। 'माय लाईफ इज माय मेसेज – गांधी स्टडी कीट' नाम से उन्होंने विविध कार्यक्रमों की एक योजना बनायी है। सन् 1989 में युनेस्को के विभागीय उपाध्यक्ष एवं भारत सरकार के साथ उसका पत्राचार भी शुरू हो गया है। दोनों की ओर से उसे अच्छा प्रतिसाद मिला है।

इस अवसर के निमित्त पीटर की दूसरी योजना है, 'अंतर्राष्ट्रीय गांधी-स्मारक साइकिल-यात्रा' (इंटरनेशनल गांधी-मेमोरियल बायसिकल टूर)। 16 सप्ताह की इस यात्रा की तफसील का नक्शे के साथ पत्रक छप कर वितरित भी हो रहा है।

2 अक्तूबर 1994 से 30 जनवरी 1995 – गांधी जन्मस्थान पोरबंदर (गुजरात) से आरंभ कर गांधी-निर्वाण स्थल राजघाट (दिल्ली) में उसका समापन होगा।

गत मार्च माह में पीटर आश्रम में कुछ दिन रहा। नयी पीढी को, शाला के छात्रों को गांधी का परिचय कराने की अपनी एक नयी योजना का आरंभ राजकोट में अभी-अभी संपन्न कर वह आया था। योजना थी, सन् 1991 से 2000 तक हर साल होनेवाली 'गांधी एज आय सी हीम' (गांधी मेरी नजरों में) रनिंग चित्रस्पर्धा। भारत के बच्चों के निकाले 500 चित्रों में से उत्तम 100 चित्रों को चुन कर, पुरस्कार दिया गया। इन चित्रों का प्रदर्शन वह बर्लिन तथा आक्सफर्ड में करने जा रहा था। इस प्रकार भारत के और विदेशों के बच्चों के बीच गांधी के निमित्त भावनात्मक एकता का सेतु भी बनेगा।

पीटर के रस के विषय हैं, 'मानव-अधिकार, समाज सुधार एवं शांतिकार्य', 'भारतीय संस्कृति और तत्त्वज्ञान', तथा सर्वाधिक रस है, 'गांधी : जीवन और कार्य विषयक अध्ययन तथा प्रचार-प्रसार'। बाहर से सतत प्रवृत्तिशील दीखनेवाला पीटर अंतर्मुख भी है। गांधी-सामग्री के संग्रह के बारे में कहता था, "यद्यपि उन चीजों का मेरे मन में बहुत महत्त्व है, मैं गांधी की मूल चीजें नहीं लेता। मुझे उसका बोझ महसूस होता है, उसके कारण कहीं मुझमें अहंकार सिर न उठाये, संग्रहवृत्ति बढ न जाये! इसलिए मैं केवल प्रतिलिपि लेता हूं। कुछ लोगों ने मुझे सद्भाव से फोटो, खडाऊ, पत्र देने की तैयारी बतायी, पर मैंने उसका नम्रता से अस्वीकार किया।"

गांधीजी का प्रभाव होने पर भी पीटर का भारत में आ कर रहने का इरादा नहीं है। कहता था, "मैं अपने स्थान में रह कर वहां के वातावरण में गांधी-विचार के अनुरूप जीवन बिताना चाहता हूं। वहां अभी वैसा कोई विकल्प (आल्टरनेटिव्ह) दीख नहीं रहा है। हम खोज रहे हैं।"...

"गांधीजी की कौनसी बात आपको सबसे अच्छी लगी?" – इस प्रश्न के उत्तर में उसने कहा, "कोई एक-दो बातें बताना कठिन है। मुझे तो उनकी समूची हस्ती (होल बीईंग) अच्छी लगती है। सत्य की उनकी खोज और निष्ठा!... वे हर बात को वैश्विक भूमिका (युनिवर्सिटी) से सोचते थे। धर्म को उन्होंने प्राचीन चीज नहीं रहने दिया, वर्तमान के अनुरूप (मोडर्न) और व्यापक (युनिवर्सल) बना दिया। दूसरी चीज उनमें यह देखी कि वे जो सोचते थे, उसका तुरंत अमल करते थे। सामान्यतः बडे माने जानेवाले लोगों का वैचारिक स्तर खूब ऊंचा होने पर भी अक्सर उनका आचार सामान्य दीख पडता है। लेकिन गांधीजी का वैसा नहीं था। अपने विचार की ऊंचाई तक आचार को ले जाने के लिए वे सतत कोशिश करते।"... कुछ देर शांत हो कर फिर कहने लगा, "बाकई वे बहुत ऊंचाई पर पहुंचे थे, फिर भी हमारे ही जैसे मालूम होते हैं। वे प्रयत्न करते, श्रम करते नजर आते हैं। वे अनुकरणीय लगते हैं। उन्हें देख ऐसा नहीं लगता कि वे इतने ऊंचे हैं कि हम वहां तक पहुंच ही नहीं सकते। वे प्रयत्नपूर्वक विकास करते चले गये हैं।"...